कथा सरिता

मुस्कुराहट

पुरानी कहावत है - **"जहाँ ना पहुंचे रवि, वहाँ पहुंचे कवि"।**

ऐसे ही एक कवि एक बाग से गुज़र रहे थे। बाग में हज़ारों फूल खिले थे। सारे फूल मुस्कराते नज़र आ रहे थे। उस बाग का नज़ारा स्वर्ग के समान था। कवि महोदय एक फूल के पास गए और बोले, मित्र तुम कुछ दिनों में मुरझा जाओगे, तुम कुछ दिनों में इस मिट्टी में मिल जाओगे, तुम फिर भी मुस्कुराते रहते हो, इतनी ताज़गी से खिले रहते हो, क्यों? फूल कुछ नहीं बोला। इतने में एक तितली कहीं से उड़ती हुई आई और फूल पर बैठ गयी। काफी देर तक तितली ने फूल की ताज़गी का आनंद उठाया और फिर उड़ चली। अब कुछ देर बाद एक भंवरा आया और फूल के चारों ओर घूमते हुए मधुर संगीत सुनाया, फिर फूल पर बैठ कर खूशबू बटोरी और फिर से उड़ चला।

एक मधुमक्खी झूमती हुई आई और फूल पर आकर बैठ गयी, ताज़ा और सुगन्धित पराग पाकर मधुमक्खी बहुत खुश हुई और शहद का निर्माण करने उड़ चली।

फिर एक छोटा बच्चा बाग में अपनी माँ के साथ खेलने आया। खिलते फूल को देखकर उसका मन बहुत प्रसन्न हुआ। उसने अपने कोमल हाथों से फूल को स्पर्श किया और खुश होता हुआ फिर से खेल में लग गया।

अब फूल ने कवि से कहा - देखा, पल भर के लिए ही सही लेकिन मेरे जीवन ने ऐसे ही ना जाने कितने लोगों को खुशियां दी हैं। इस छोटे से जीवन में ही मैंने बहुत सारे चेहरों पर मुस्कान बिखेरी है। मुझे पता है कि कल मुझे इस मिट्टी में मिल जाना है लेकिन इस मिट्टी ने ही मुझे ये ताज़गी और सुगंध दी है तो फिर इस मिट्टी से मुझे कोई शिकायत नहीं है।

मैं मुस्कुराता हूँ क्योंकि मैं मुस्कुराना जानता हूँ। मैं खिला हूँ क्योंकि मैं खिलखिलाना जानता हूँ। मुझे अपने मुरझाने पर गम नहीं है। मेरे बाद कल फिर इस मिट्टी में नया फूल खिलेगा, फिर से ये बाग सुगन्धित हो जाएगा। ना ये ताज़गी रुकेगी और ना ही ये मुस्कुराहट। यही तो जीवन है।

विनम्रता को ना छोड़ें

एक संत अपने शिष्य के साथ जगंल में जा रहे थे। ढलान से गुज़रते वक्त अचानक शिष्य का पैर फिसला और वह तेज़ी से नीचे की ओर लुढ़कने लगा। वह खाई में गिरने ही वाला था कि तभी उसके हाथ में बांस का एक पौधा आ गया। उसने बांस के पौधे को मजबूती से पकड़ लिया और वह खाई में गिरने से बच गया। बांस धनुष की तरह मुड़ गया लेकिन न तो वह ज़मीन से उखड़ा और न ही टूटा। वह बांस को मजबूती से पकड़कर लटका रहा। थोड़ी देर बाद उसके गुरू पहुंचे। उसको हाथ का सहारा देकर ऊपर खींच लिया। दोनों अपने रास्ते पर आगे बढ़ चले। राह में संत ने शिष्य से कहा, जान बचाने वाले बांस ने तुमसे कुछ कहा, तुमने सुना क्या?

शिष्य ने कहा, नहीं गुरु जी, शायद प्राण संकट में थे इसलिए मैंने ध्यान नहीं दिया और मुझे तो पेड़-पौधों की भाषा भी नहीं आती। आप ही बता दीजिए उसका संदेश। गुरु मुस्कुराये और बोले, खाई में गिरते समय तुमने जिस बांस को पकड़ लिया था, वह पूरी तरह मुड़ गया था। फिर भी उसने तुम्हें सहारा दिया और जान बचा ली। संत ने बात आगे बढ़ाते हुए कहा कि बांस ने तुम्हारे लिए जो संदेश दिया वह मैं तुम्हें दिखाता हूँ। गुरु ने रास्ते में खड़े बांस के एक पौधे को खींचा और फिर छोड़ दिया। बांस लचककर अपनी जगह पर वापस लौट आया। हमें बांस के इसी लचीलेपन की खूबी को अपनाना चाहिए। तेज़ हवाएं बांसों के झुरमुट को झकझोर कर उखाड़ने की कोशिश करती हैं लेकिन वह आगे-पीछे डोलता हुआ मजबूती से धरती में जमा रहता है। बांस ने तुम्हारे लिए यही संदेश भेजा है कि जीवन में जब भी मुश्किल दौर आए तो थोड़ा झुककर विनम्र बन जाना लेकिन टूटना नहीं, क्योंकि बुरा दौर निकलते ही पुनः अपनी स्थिति में दुबारा पहुंच सकते हो।

शिष्य बड़े गौर से सुनता रहा। गुरु ने आगे कहा, बांस न केवल हर तनाव को झेल जाता है बल्कि यह उस तनाव को अपनी शक्ति बना लेता है। और दुगुनी गति से ऊपर उठता है। बांस ने कहा कि तुम अपने जीवन में इसी तरह लचीले बने रहना। गुरु ने शिष्य को कहा, पुत्र पेड़-पौधों की भाषा मुझे भी नहीं आती। बेजुबान प्राणी हमें अपने आचरण से बहुत कुछ सिखाते हैं।

ज़रा सोचिए, कितनी बड़ी बात है। हमें सीखने के सबसे ज़्यादा अवसर उनसे मिलते हैं जो अपने प्रवचन से नहीं बल्कि कर्म से हमें लाख टके की बात सिखाते हैं। हम नहीं पहचान पाते तो यह कमी हमारी है।

मोम का शेर

सर्दियों के दिन थे। अकबर का दरबार लगा हुआ था। तभी फारस के राजा का भेजा एक दूत दरबार में उपस्थित हुआ। राजा को निचा दिखाने के लिए फारस के राजा ने मोम से बना शेर का एक पुतला बनवाया था और उसे पिंजरे में बंद करके दूत के हाथों अकबर को भिजवाया और उन्हें चुनौती दी कि इस शेर को पिंजरा खोले बाहर निकाल कर दिखाए।

बीरबल की अनुपस्थिति के कारण अकबर सोच में पड़ गए कि अब इस समस्या को कैसे सुलझाया जाए। अकबर ने सोचा कि अगर दी हुई चुनौती पार नहीं की गई तो जग हँसायी होगी। इतने में ही परम चतुर, ज्ञान-गुणवान बीरबल आ गए। और उन्होंने मामला हाथ में ले लिया।

बीरबल ने एक गरम सरिया मंगवाया और पिंजरे में कैद मोम के शेर को पिंजरे में ही पिघला डाला। देखते-देखते मोम पिघलकर बाहर निकल गया। अकबर अपने सलाहकार बीरबल की इस चतुराई से काफी प्रसन्न हुए और फारस के राजा ने फिर कभी अकबर को चुनौती नहीं दी।

शिक्षा : बुद्धि के बल पर बड़ी से बड़ी समस्या का हल निकाला जा सकता है।

आस्का-ओडिशा। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए विधायक मंजुला स्वेन, ब्र.कु. प्रवाती, एस.डी.पी.ओ. सूर्यमणि प्रधान, रिटायर्ड प्रिन्सीपल पीज़ेन्ट्स पण्डा, ओडिशा सेक्रेट्री जय चन्द्रकायक, पतंजलि योग समिति से योगा गुरु प्रसन्ना मिश्रा, चिन्मय मिशन से रघुनाथ पाढ़ी तथा अन्य।

भुवनेश्वर-मंचेश्वर। ज्ञानचर्चा के पश्चात् सेंट ज़ेवियर स्कूल की प्रिंसिपल रंजीता पाणिग्रही के साथ ब्र.कु. मंजू तथा स्कूल टीचर्स।

वहादुरगढ़-हरियाणा। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ एवं आयुष विभाग के तत्वाधान में आयोजित कार्यक्रम के दौरान आयुष विभाग,झज्जर के डॉ. मोहम्मद कादिर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अंजली। साथ हैं विधायक नरेश कौशिक, एस.डी.एम. तरुण पावरिया, पतंजलि योग समिति अध्यक्ष दीपक कुमार तथा अन्य।

एस.बी.एस. नगर-नवांशहर(पंजाब)। ज्ञानचर्चा के पश्चात् जिला बार एसोसिएशन के नवनियुक्त प्रधान एडवोकेट वरिन्दर सिंह पाहवा को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका व प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. राम व ब्र.कु. पोखर।

गया-ए.पी. कॉलोनी(बिहार)। मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती की 54वीं पुण्य स्मृति दिवस पर श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए जेल सुपरींटेंडेंट राजीव कुमार, डॉ. कृष्ण मुरारी, मगध प्रमण्डल आयुक्त के सटेनो आनंद मोहन, समाजसेवी गीता बहन, अधिवक्ता शिव बच्चन सिंह, व्यवसायी राजू अग्रवाल, ब्र.कु. सुनीता तथा अन्य।

मुकेरियां-दसुआ(पंजाब)। नवनिर्मित ज्ञान सूर्य भवन के उद्घाटन के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. ज्ञानी बहन, ब्र.कु. सुमन, ब्र.कु. मधु, ब्र.कु. जसकिरत तथा अन्य।

अमृतसर-पंजाब। ब्रह्माकुमारीज़ के युवा प्रभाग द्वारा आयोजित मेरा भारत स्वर्णिम भारत बस प्रदर्शनी अभियान के अमृतसर पहुँचने पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान बस अभियान टीम को सम्मानित करते हुए राष्ट्रीय सिक्ख फेडरेशन के अध्यक्ष सरदार रघुबीर सिंह तथा उनके साथी।

रादौर-कुरुक्षेत्र। मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती के पुण्य स्मृति दिवस पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए ब्र.कु. राज बहन, ब्र.कु. राजू, ब्र.कु. साक्षी, ब्र.कु. ऋतु तथा ब्र.कु. अनिशा।